सांगीतिक उपलब्धि पर चिन्ता के प्रभाव का अध्ययन

KAMLESH KUMARI BHATOYA

Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

संगीत एक प्रदर्शन कला है। प्रदर्शन एक ऐसा माध्यम है जिससे एक कलाकार के व्यक्तित्व एवं उसके हाव-भाव का पता लगाया जा सकता है। सांगीतिक प्रदर्शन चाहे परीक्षा के समय हो या किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम के समय उस समय एक कलाकार के दिमाग में कई मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं जिससे सांगीतिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। संगीत का विद्यार्थी जब भी सांगीतिक प्रदर्शन करता है तो उसे काफी चिन्ता रहती है जो उसके प्रदर्शन को प्रभावित करती है। प्रायः यह देखा गया है कि यदि चिन्ता निम्न स्तर पर होगी तो छात्र का प्रदर्शन अच्छा रहता है और यदि चिन्ता का स्तर उच्च होगा तो वह छात्र के प्रदर्शन को प्रभावित करेगी जिससे उसकी सांगीतिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

बीज शब्द

सांगीतिक उपलब्धि, चिन्ता

भूमिका

कला कोई भी हो उसका उद्देश्य मानव के अमूर्त मनोभावों को मूर्त रूप देना तथा उसका लक्ष्य जीवन को सौन्दर्यमय बनाना है। संगीत एक ऐसी कला है जो प्राणी को प्राणी के साथ जोड़ती है और एक दूसरे से भावात्मक संबंध बनाने में भी सहयोगी है। विद्यार्थी जीवन में बहुत सी ऐसी समस्याएं रहती हैं जो चिन्ता का रूप ले लेती हैं। वही आगे चलकर सांगीतिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है तथा सांगीतिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। चिन्ता कई प्रकार की हो सकती है। एक वह जो हम किसी कार्य को करने से पहले महसूस करते हैं। जैसे कि शिक्षा संबंधी, रोजगार संबंधी, विवाह संबंधी, परिवार संबंधी के जीवन को भी प्रभावित करती है। ठीक उसी प्रकार एक संगीत छात्र भी अपने जीवन में भी कुछ ऐसा ही प्रभाव महसूस करता है। प्रायः देखा गया है कि एक छात्र प्रदर्शन से पहले सामान्य रहता है, परन्तु जैसे ही वह मंच पर अपने प्रदर्शन या परीक्षा देने के लिए बैठता है तो उसे प्रदर्शन संबंधी कई विचार आने शुरू हो जाते हैं जिससे कि प्रदर्शन प्रभावित होता है।

चिन्ता

जब वास्तविक कर्म संभव नहीं होता तो चिन्ता वास्तविक कर्म की स्थानापन्न होती है। विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी कर चुका है परीक्षा भी हो चुकी है। उसने काम भी अच्छा किया है। अब उसे कुछ नहीं करना है। इसलिए उसे मन से निकाल देना चाहिए। लेकिन वह ऐसा नहीं करता यह विचार करता है और चिन्तातुर हो जाता है। यहां चिन्ता वास्तविक कार्य की स्थानापन्न है। हर व्यक्ति चिन्ता का अनुभव करता है। वर्तमान वैज्ञानिक सभ्यतायें जन साधारण इस से कुछ ज्यादा ही ग्रस्त हैं। चिन्ता को परिभाषित करते हुए कोलमैन (1981) ने लिखा है:

“भय और आशंका की सामान्यीकृत अनुभूति ही चिन्ता है”

जब हम दूसरों के साथ संतोषजनक संबंध अर्थात् संबंधन की आवश्यकता बनाने की अपनी योग्यता के बारे में आशंकित अनुभव करते हैं तो उस समय सामान्यता जो अनुभूति जागृत होती है वह चिन्ता है। निःसंदेह चिन्ता अन्य संदर्भों में भी प्रकट हो सकती है, लेकिन हमारे संबंध संभवतः इसका एक समान स्रोत है। चिन्ता एक प्रकार का तनाव होता है। संगीत एक प्रयोगात्मक विषय है। अतः समय विद्यार्थी के दिमाग में कई तरह के विचार रहते हैं, जिससे कि उसके प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ता है।

चिन्ता के कई कारण होते हैं जैसे धन, पढ़ाई, विवाह, सौन्दर्य, समाज, सम्मान आदि। पूर्व-किशोरावस्था में बालक अथवा बालिकाएं चिन्ता में कभी-कभी दिखलाई पड़ते हैं। स्कूल में दिया हुआ काम विद्यार्थियों को अधिक तंग किया करता है। 12 और 14 वर्ष के बीच में किशोर अपनी पढ़ाई तथा 17 वर्ष के अन्दर उसे अपनी पढ़ाई, भविष्य, गरीबी की चिन्ता रहती है। 18 से 22 वर्ष की अवस्था में उसे विवाह की चिन्ता हो जाती है। प्रायः यह देखा जाता है कि लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा धन तथा अपनी योग्यता के विषय में अधिक चिन्ता रहती है। किशोरावस्था के अन्त में लड़के को कुछ धन कमाने की चिन्ता लग जाती है। इस चिन्ता का उसकी योग्यता से भी घनिष्ठ संबंध रहता है। लड़का प्रायः यही सोचता है कि वह पर्याप्त धन कमाने योग्य होगा अथवा नहीं। चिन्ता दो प्रकार की होती है – Trait Anxiety – State Anxiety

उद्देश्य

हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के संगीत प्रदर्शन पर चिन्ता के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर चिन्ता के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

न्यादर्श

हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के संगीत के 369 छात्र-छात्राओं को न्यादर्श में शामिल किया गया है।

उपकरण

दत्त सामग्री संकलन के लिए Spielberger द्वारा बनाई गई चिन्ता मापनी का उपयोग किया तथा दत्तों के विश्लेषण करने के लिए टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया।

हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के संगीत के स्नातक के विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर चिन्ता के प्रभाव की तुलना—

तालिका – 1

समूह	मध्यमान	मध्यमान	विचलांक	विचलांक	'टी'
G1-G2	76.54	65.27	6.27	8.43	12.6
G1-G3	76.54	58.73	6.27	7.92	16.7
G2-G3	65.27	58.73	8.43	7.92	6.2

df=367, t=2.36 at 0.01 level of confidence

G1 निम्न चिन्ता समूह, G2 मध्य चिन्ता समूह, G3 उच्च चिन्ता समूह

उपर्युक्त तालिका से प्राप्त हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर निम्न चिन्ता समूह तथा मध्य चिन्ता समूह (G1-G2) का मध्यमान 76.54 तथा 65.27 है तथा 'टी' की गणना का मान 12.6 है जो सार्थकता की 0.01 स्तर पर 'टी' के मानक मूल्य (टी 2.36) से ज्यादा है जो 0.01 पर सार्थक है।

उपर्युक्त तालिका से प्राप्त हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर निम्न चिन्ता समूह तथा उच्च चिन्ता समूह (G1-G3) का मध्यमान 76.54 तथा 58.73 है तथा 'टी' की गणना का मान 16.7 है जो सार्थकता की 0.01 स्तर पर 'टी' के मानक मूल्य (टी 2.36) से ज्यादा है जो 0.01 पर सार्थक है।

उपर्युक्त तालिका से प्राप्त हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर मध्य चिन्ता समूह तथा उच्च चिन्ता समूह (G2-G3) का मध्यमान 65.27 तथा 58.73 है तथा 'टी' की गणना का मान 6.2 है जो सार्थकता की 0.01 स्तर पर 'टी' के मानक मूल्य (टी 2.36) से ज्यादा है जो 0.01 पर सार्थक है।

इसलिए 'हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर चिन्ता के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं होगा', परिकल्पना अस्वीकार की गई। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर चिन्ता के प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संगीत के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सांगीतिक प्रदर्शन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। चिन्ता की उच्च औसत एवं कम स्तर वाले स्नातक के छात्रों के संगीत प्रदर्शन में सार्थक अन्तर है। यदि छात्र की चिन्ता का स्तर निम्न होगा तो प्रदर्शन अच्छा रहेगा, यदि चिन्ता का स्तर होगा तो प्रदर्शन का स्तर निम्न होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- सिन्हा डॉ० यदुनाथ, मनोविज्ञान, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता हॉस्पिटल रोड आगरा।
- श्रीवास्तव अखिलेश, (2013) अधिगम एवं व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- कुमार देवेन्द्र, (1955) अनुवाद, फ्रायड (महान् मनोविज्ञान सिगमंड फ्रायड की अमरकती) मनोविश्लेषण, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
- Robert J. Edelmenn (1992)– Anxiety Theory Research and Intervention in Clinical and Health Psychology.
- Cavington, M.V.(1983) Anxiety, test difficulty and childhood problem solving: A self worth interpretation. In Ploes H.M. Wonder, R. Schwerrer and C.D. Spielberger (Eds) Advances in Test Anxiety Research (Vol-2), Lies Swets and Zeitlineer, 1983, 101-110.
- Sharma Mritunjay (2010), Music Education and Psychology of Music, Abhijeet Publications, Delhi.
- Sarason I.G., Experimental approaches to test Anxiety: Attention and the uses of information: In C.D. Spielberger (Ed.) Anxiety: Current Trends in Theory and Research (Vol-2). New York: Academic Press, 1972. PP 381-403.